रमेश बिजलानी

चित्र : मोहित सुनेजा

10 से 12 वर्ष के बच्चों के लिए

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की स्थापना पुस्तकों के प्रोन्नयन और पठन अभिरुचि के विकास के उद्देश्य से सन् 1957 में भारत सरकार (उच्चतर शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय) द्वारा की गई थी। न्यास द्वारा हिंदी, अँग्रेजी सहित 30 से अधिक भाषाओं व बोलियों में पुस्तकों का प्रकाशन किया जाता है। बच्चों की पुस्तकों का प्रकाशन सदैव से संस्था की प्राथमिकता रही है।

ISBN 978-81-237-9131-9

पहला ईप्रिंट संस्करण : 2020



Kavya Makes up Her Mind *(Hindi)*

**₹ 50.00**

ईप्रिंट द्रवारा ऑर्नट टेक्नो सविसेज प्रा.लि

निदेशक, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज़-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 द्वारा प्रकाशित
www.nbtindia.gov.in

नेहरू बाल पुस्तकालय

# काव्या का फैसला

रमेश बिजलानी

चित्र
मोहित सुनेजा

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
NATIONAL BOOK TRUST, INDIA

अनाया
को समर्पित
जिसने काव्या को सृजित करने के लिए
मुझे प्रेरित किया
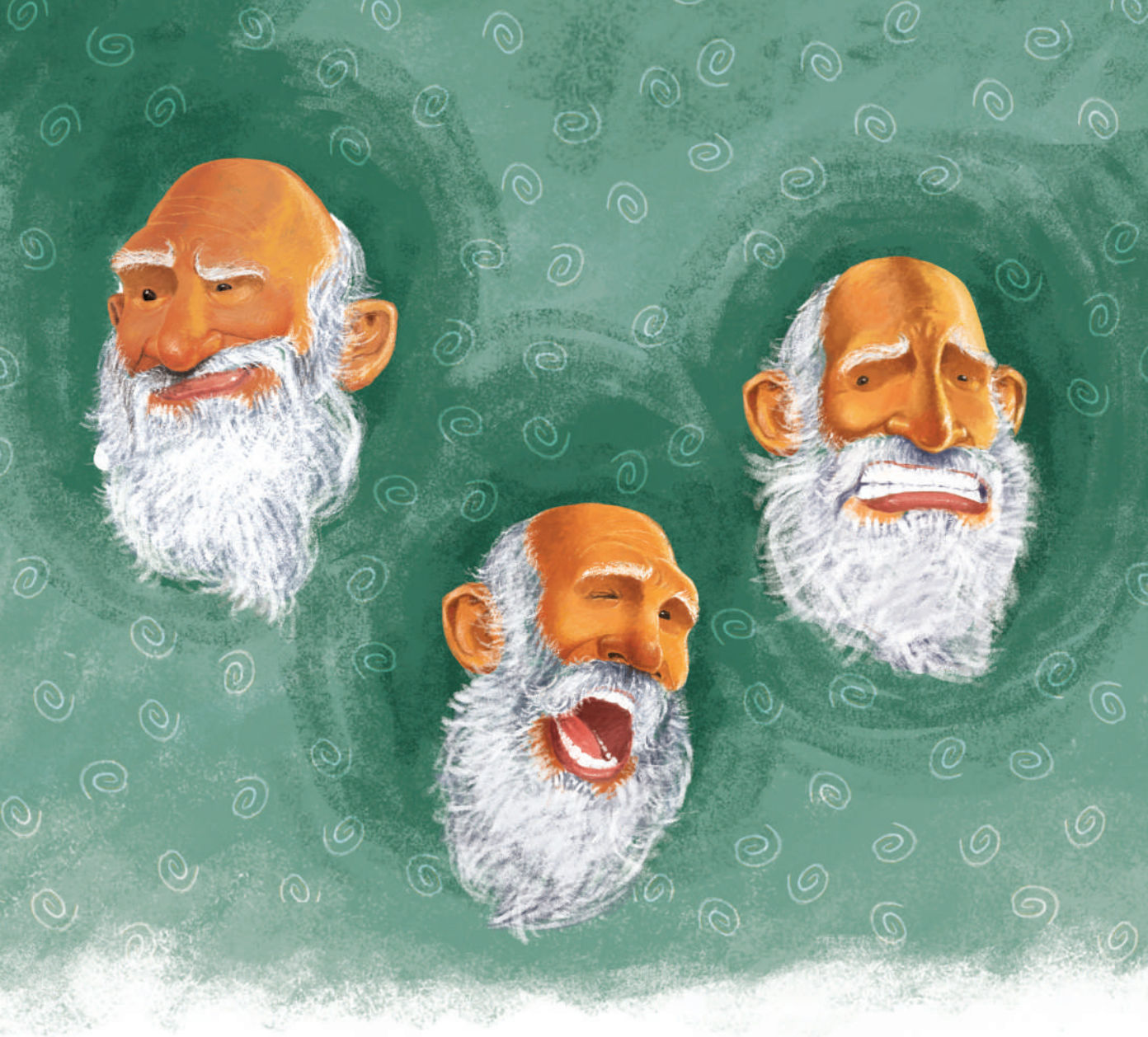
मेरा नाम काव्या है। मेरे एक बूढ़े नाना जी भी हैं। उनके सिर पर बस थोड़े से ही बाल हैं।

एक दिन मैंने उनसे पूछा, "आप के बाल कैसे उड़ गए?" उनका जवाब था, "पता नहीं।" एक दिन मैंने उनसे पूछा, "यह कैसे हुआ कि आपके बाल सिर से तो चले गए परन्तु आपकी दाढ़ी इतनी लम्बी है?" उन्होंने फिर से कहा, "पता नहीं।"

मैं अपने नाना जी से खूब सारे सवाल पूछती हूँ, लेकिन उनको जवाब तो एक-आध का ही आता है। लेकिन वे मेरे सवालों से तंग नहीं होते। वे मुझे बहुत प्यार करते हैं। लगता है वे मुझे इतना प्यार इसीलिये करते हैं क्योंकि मैं उनसे ढेर सारे सवाल पूछती रहती हूँ।

लेकिन एक बात ऐसी है जिसका जवाब उन्हें मालूम है। मैं जब भी उनसे कहती हूँ "मुझे चाकलेट के लिये पैसे दे दीजिये", तो वे हमेशा कहते हैं, "नहीं।" मैं पूछती हूँ, "क्यों नहीं? प्लीज़, दे दीजिये न", तो वे कहते हैं, "चाकलेट खाने से दाँत खराब हो जाते हैं।" फिर वे अपना मुँह खोलते हैं, और मुझे अपने दाँत दिखाकर कहते हैं, "जब मैं दस साल का था तो मेरे बत्तीस दाँत थे। अब मैं साठ साल का हो गया हूँ, और अब भी मेरे दाँत पूरे बत्तीस हैं। मैं चाकलेट नहीं खाता हूँ ना, इसीलिए मेरे पूरे दाँत बचे हुए हैं।

यदि मैं पूछूँ, "आपने कभी अपने दाँत गिने हैं?", तो वे कहते हैं, "नहीं गिने तो नहीं हैं। सभी कहते हैं, सभी के बत्तीस दाँत होते हैं, तो मेरे भी बत्तीस ही होंगे।" मुझे तो नहीं लगता कि यह अच्छा जवाब है। उनको कभी अपने दाँत गिन जरूर लेने चाहिये। तभी उनको पता चलेगा कि सचमुच उनके कितने दाँत हैं।
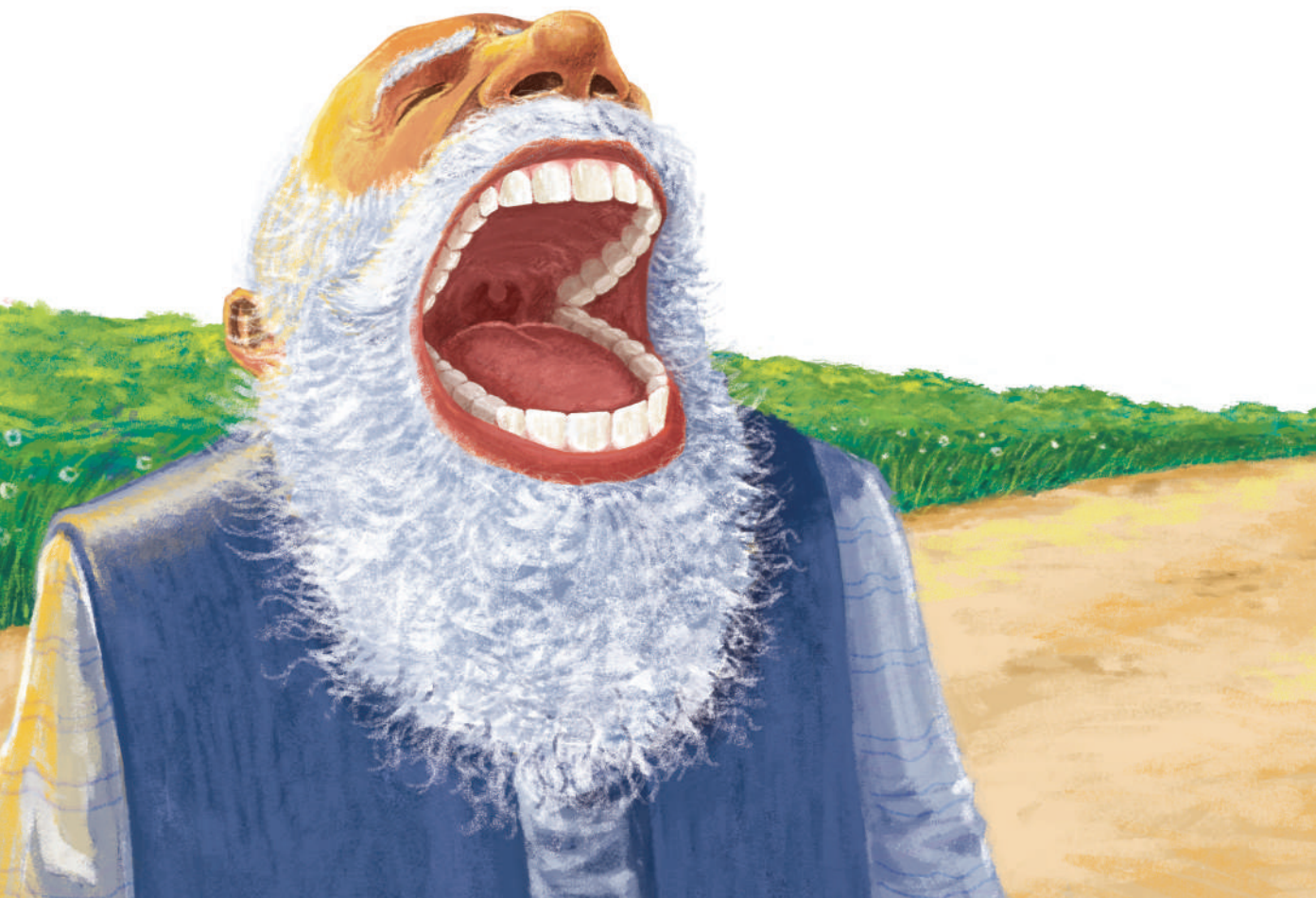
कभी-कभी मेरे नाना जी भी मुझसे सवाल पूछते हैं। एक दिन उन्होंने मुझसे पूछा, "तुम बड़ी होकर क्या बनना चाहती हो?"

मुझे मेरी अध्यापिका बहुत अच्छी लगती है। इसलिये मैंने कहा, "मैं टीचर बनना चाहती हूँ।" इस पर उन्होंने मुझसे पूछा, "तुम केवल एक टीचर बनना चाहती हो, या अच्छी टीचर बनना चाहती हो?" यह भी कोई पूछने की बात है? मैंने एकदम से जवाब दिया, "मैं अच्छी टीचर बनूंगी।" फिर उन्होंने मुझसे पूछा, "अच्छी टीचर कैसी होती है ?"

मुझे तो लगता है कि मेरी टीचर बहुत अच्छी हैं। इसलिये मैंने नाना जी को वे सब बातें बतानी शुरू कीं जो मुझे अपनी टीचर में अच्छी लगती हैं। मैंने बोलना शुरू किया, और बोलती ही गई, "अच्छी टीचर सुन्दर दिखती है। उसके कपड़े सुन्दर होते हैं। उसकी आवाज मीठी होती है। वह बच्चों को प्यार करती है। वह कहानियाँ सुनाती है और बच्चों को हँसाती है। वह बच्चों के साथ खेलती है। वह कविताएँ सुनाती है, और सुनाते समय ऐसे हिलती-डुलती है और मुँह बनाती है जिससे बच्चे हँस पड़ें। और, जब कोई बच्चा टॉयलेट जाने के लिए छुट्टी मांगता है तो कभी मना नहीं करती।" मैंने सोचा मैंने अच्छी टीचर के बारे में सब कुछ बता दिया है। पर मेरे नाना जी बोले, "यह सब एक वाक्य में बताओ।" इतनी सारी बातें एक वाक्य में कैसे बता सकते हैं? इसलिये मैंने उनसे कहा, "बमैं तो नहीं बता सकती। आप खुद ही बताइये।" मैंने सोचा शायद वे खुद भी नहीं बता पाएँगे।

उन्होंने कहा, "अच्छी टीचर वह होती है जो टीचर होने के साथ-साथ अच्छा इन्सान भी होती है।" मेरे नाना जी कभी-कभी बहुत होशियारी की बातें करते हैं।

एक दिन मैं स्कूल में खेल रही थी। खेलते-खेलते मैं गिर गई, और मुझे घुटने में चोट लग गई। मेरे एक मित्र ने मुझे उठाया। टीचर ने उसे कहा, "तुम अच्छे बच्चे हो। अब काव्या को डिस्पेन्सरी ले जाओ।"

डिस्पेन्सरी में एक नर्स है जिसको सभी सिस्टर बुलाते हैं। सिस्टर ने मेरे आँसू पोंछे। फिर उन्होंने मुझे प्यार किया। उन्होंने घाव को साबुन वाले पानी से धोया, और फिर रूई से सुखाया। उसके बाद उन्होंने घाव पर दवाई लगाई। फिर उन्होंने घाव पर पट्टी

बांधी। उन्होंने यह सारा काम बहुत प्यार से किया, लेकिन फिर भी थोड़ा दर्द तो हुआ। उनको पता था कि थोड़ा-सा दर्द तो होगा ही। इसलिए पट्टी करते-करते वे मुझे प्यार करती रहीं और मुझसे बातें करती रहीं। सारा काम खतम करके उन्होंने मेरे हाथ को चूमा, और बोलीं, "दर्द कम हुआ?" मैंने धीरे से 'हां' बोला और सिर हिलाया। तो वे बोलीं, "देखो, चूमा हाथ को, और दर्द घुटने में कम हुआ-है न जादू? अब जादू भी देख लिया-अब तो हँसों।" इस पर तो मुझे हँसी आ गई।

जब मैं घर आई तो मेरे नाना जी चौंक कर बोले, "क्या हुआ?" मैंने उन्हें सब कुछ बता दिया, और फिर कहा, "मैं बड़ी होकर नर्स बनूंगी।"

मेरे नाना जी ने कहा, "तुम केवल नर्स बनोगी या अच्छी नर्स बनोगी?" मैंने एकदम से कहा, "मैं अच्छी नर्स बनूँगी।"

फिर उन्होंने मुझसे पूछा, "अच्छी नर्स कैसी होती है?"

मैंने कहा, "अच्छी नर्स, नर्स होने के साथ-साथ अच्छा इन्सान भी होती है।"

मेरे नाना जी बोले, "तू है तो बड़ी अकलमन्द।"
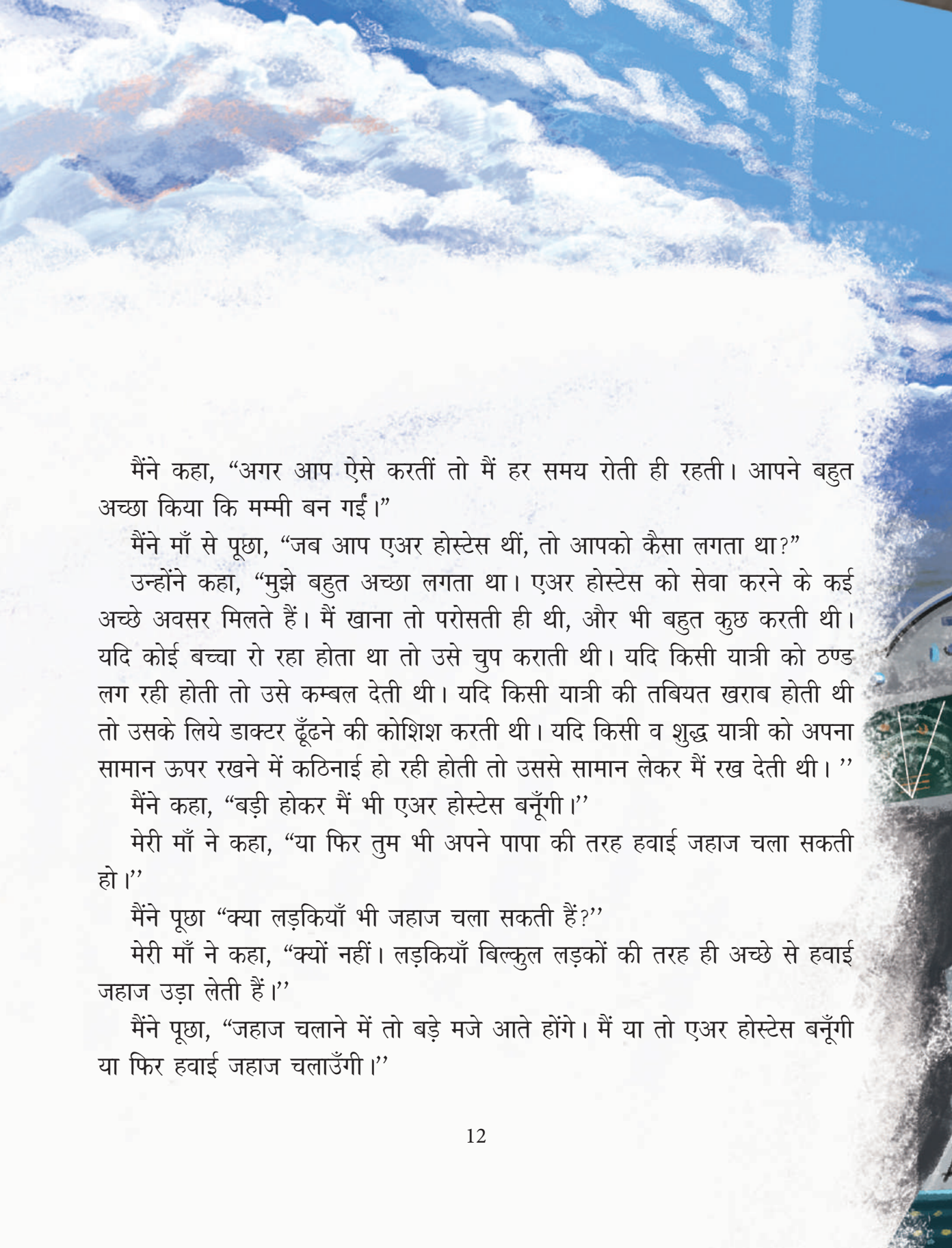
एक दिन मैंने अपनी माँ से पूछा, "मैं आजकल सोचती रहती हूँ कि बड़ी होकर क्या बनूँ। आप तो काफी बड़े हो गए हो। आप क्या बने हो?"

वे बोलीं, "पहले मैं एअर होस्टेस थी। अब मैं बस मम्मी हूँ।" और यह कहते हुए उन्होंने मुझे गले लगा लिया।

मैंने उनसे पूछा, "एअर होस्टेस क्या होती है?"

उन्होंने कहा, "एअर होस्टेस हवाई जहाज में यात्रियों को खाना परोसती है।" मैंने कहा, "आपने एअर होस्टेस का काम छोड़ क्यों दिया?"

वे बोलीं, "एअर होस्टेस तो हो सकता है कि आज दिल्ली में हो, कल चेन्नई में, और परसों कोलकता में बिल्कुल तुम्हारे पापा की तरह। अगर मैं भी कभी कहीं, कभी कहीं होती तो हर समय तुम्हारे पास कैसे रहती ?"

मैंने कहा, "अगर आप ऐसे करतीं तो मैं हर समय रोती ही रहती। आपने बहुत अच्छा किया कि मम्मी बन गईं।"

मैंने माँ से पूछा, "जब आप एअर होस्टेस थीं, तो आपको कैसा लगता था?"

उन्होंने कहा, "मुझे बहुत अच्छा लगता था। एअर होस्टेस को सेवा करने के कई अच्छे अवसर मिलते हैं। मैं खाना तो परोसती ही थी, और भी बहुत कुछ करती थी। यदि कोई बच्चा रो रहा होता था तो उसे चुप कराती थी। यदि किसी यात्री को ठण्ड लग रही होती तो उसे कम्बल देती थी। यदि किसी यात्री की तबियत खराब होती थी तो उसके लिये डाक्टर ढूँढने की कोशिश करती थी। यदि किसी व शुद्ध यात्री को अपना सामान ऊपर रखने में कठिनाई हो रही होती तो उससे सामान लेकर मैं रख देती थी। ''

मैंने कहा, "बड़ी होकर मैं भी एअर होस्टेस बनूँगी।''

मेरी माँ ने कहा, "या फिर तुम भी अपने पापा की तरह हवाई जहाज चला सकती हो।''

मैंने पूछा "क्या लड़कियाँ भी जहाज चला सकती हैं?''

मेरी माँ ने कहा, "क्यों नहीं। लड़कियाँ बिल्कुल लड़कों की तरह ही अच्छे से हवाई जहाज उड़ा लेती हैं।''

मैंने पूछा, "जहाज चलाने में तो बड़े मजे आते होंगे। मैं या तो एअर होस्टेस बनूँगी या फिर हवाई जहाज चलाऊँगी।''

मैंने नाना जी को कहा, "नानू, मैं क्या करूँ, कभी कुछ कहती हूँ, कभी कुछ कहती हूँ। अब मुझे लगता है कि मैं बड़ी होकर या तो एअर होस्टेस बन जाऊँ, या फिर हवाई जहाज चलाउँगी।"

वे कुछ कह पाते, उससे पहले ही मैं बोलती गई, "चाहे मैं एअर होस्टेस बनूँ या जहाज चालक, बनूँगी अच्छी एअर होस्टेस या अच्छी जहाज चालक। और, अच्छी एअर होस्टेस वह होती है जो एअर होस्टेस होने के साथ-साथ अच्छी इन्सान भी होती है, और

अच्छा जहाज चालक वह होती है जो जहाज चालक होने के साथ-साथ अच्छा इन्सान भी होती है।" यह सुनकर नाना जी बहुत खुश हुए, और उन्होंने मुझे गले से लगाकर मेरे सिर को चूमा।

एक बार मुझे बुखार हो गया। माँ मुझे डाक्टर के पास ले गई। डाक्टर ने मुझे दवाई दी। मैंने दवाई ली, पर फिर भी रात को मेरा बुखार बढ़ गया। माँ ने डाक्टर को फोन किया। डाक्टर ने कहा कि माँ मेरे माथे पर ठण्डे पानी में भिगो कर रूमाल रखें। हालाँकि उस समय बहुत रात हो चुकी थी, डाक्टर ने बहुत अच्छी तरह बात की। उन्होंने कहा, "यदि बुखार कम न हो तो मुझे फिर फोन करना, चाहे कितने भी बजे हों।"

मेरी माँ ने एक रूमाल ठण्डे पानी में भिगोकर मेरे माथे पर रखा। थोड़ी देर में रूमाल गरम हो गया। उन्होंने रूमाल को फिर ठण्डे पानी में भिगोया और मेरे माथे पर रखा। रूमाल फिर गरम हो गया, और उन्होंने रूमाल को फिर से ठण्डे पानी में भिगोया और मेरे माथे पर रखा। यह सिलसिला बहुत देर तक चलता रहा। अन्त में मेरा बुखार तो उतर गया, पर मेरी माँ शायद उस रात को सोई नहीं।

अगले दिन मैंने माँ से कहा, "आप बहुत थक गई होंगी। आप पूरी रात सोये नहीं।" उन्होंने कहा, "पगली, ऐसी बातें नहीं करते। तुझे बुखार हो, और मैं सो जाऊँ? ऐसे कभी हो सकता है। मैं तेरे लिये कुछ भी कर सकती हूँ।" ऐसे कहते हुए, उन्होंने मुझे गले लगा लिया।

मैं भागकर नाना जी के पास गई, और उनसे कहा, “मैं आपको बहुत तंग करती हूँ न, पर मैं क्या करूँ, कभी कुछ करने को मन करता है, कभी कुछ। अब मुझे लगता है मैं बड़ी होकर घर पर ही रहूँगी, मम्मी की तरह। ” इससे पहले कि वे कुछ कहते, मैं बोलती गई, “मैं अच्छी माँ बनूंगी, और अच्छी माँ वह होती है जो माँ होने के साथ-साथ अच्छा इन्सान भी होती है-एकदम मेरी माँ की तरह।” मेरे नाना जी यह सुनकर बहुत खुश हुए, और उन्होंने मुझे गले से लगाकर मेरे सिर को चूमा।

मैंने अब पक्का फैसला कर लिया है कि मुझे अभी यह फैसला करने की जरूरत ही नहीं है कि मैं बड़ी होकर क्या बनूँगी। मैं क्या बनूँ उससे क्या अंतर पड़ता है? पर मैं अच्छी इन्सान जरूर बनूँगी।

काव्या की क्लास में एक लड़की थी जिसका नाम था आद्या। एक दिन आद्या बालों में एक बहुत सुन्दर क्लिप लगा कर आई। क्लिप तितली की तरह दिखता था। काव्या को वह क्लिप बहुत अच्छा लगा और उसका बहुत मन कर रहा था कि उसके पास भी वैसा ही क्लिप हो।

जब स्कूल की छुट्टी हुई तो ऐसा हुआ कि आद्या और काव्या सबसे बाद में क्लास से बाहर निकले। आद्या के बाहर निकलते समय क्लिप उसके बालों से फिसलकर नीचे गिर गया। आद्या को उसका पता नहीं चला, लेकिन काव्या उसके पीछे चल रही थी सो उसने देख लिया। काव्या ने क्लिप उठा लिया और आद्या को आवाज देने ही लगी थी, लेकिन इतने में उसका दिल बदल गया। काव्या ने अपनी चाल धीमी कर ली और चुपके से क्लिप अपने बस्ते में डाल दिया। उसने ऐसा मुँह बना लिया जैसे कुछ हुआ ही ना हो।

आद्या और काव्या एक ही बस से घर जाती थीं। बस में काव्या को घबराहट महसूस होने लगी। उसको पता था कि घबराहट इसलिये हो रही है क्योंकि उसने आद्या का क्लिप चुरा लिया था। उसके बाद उसके मन में विचारों की एक लड़ी लग गई :

"मुझे आद्या को बता देना चाहिये कि उसका क्लिप गिर गया था, और क्लिप उसे दे देना चाहिये....

पर क्लिप मुझे इतना पसन्द है....

मैंने आद्या का क्लिप चुराया है। चोरी करना पाप है....

मैंने क्लिप चुराया नहीं है, उसने क्लिप गिरा दिया था....

क्लिप गिर भी गया था तो मैं उसे बता तो सकती थी....

मैं क्यों बताऊँ। मैं उसकी नौकर लगती हूँ क्या....

उसको मैंने बताया नहीं तो कम से कम क्लिप जहाँ गिरा था वहीं छोड़ तो सकती थी यदि मैं क्लिप को वहीं छोड़ देती तो उसे कोई और उठा लेता। अगर आद्या का क्लिप खोना ही था तो किसी और को क्यों मिले? इससे अच्छा मैं ही ले लूँ....

मैं आद्या को क्लिप देकर उससे पूछ सकती हूँ उसने कहाँ से लिया था। मैं भी वहीं से जाकर ले सकती हूँ....

आद्या को तो पता है क्लिप कहाँ मिलता है। मैं कहाँ ढूंढती फिरूंगी। क्लिप ज्यादा महँगा तो नहीं लगता.... पर मुझे क्लिप रखना नहीं चाहिये....

आद्या इतनी लापरवाह है। उसे अपनी चीजों का ध्यान रखना चाहिये। एक क्लिप गुम होगा तो उसको आगे के लिए एक सबक मिलेगा....

आद्या क्लिप वापिस पाकर कितनी खुश होगी। मैं उसको खुश कर देती हूँ....

पर क्लिप इतना सुन्दर है। मुझे तो यह क्लिप चाहिये....

अगर मैं उसको क्लिप अब वापिस करूँगी तो वह सोचेगी मैं चोर हूँ। पूछेगी, क्लिप जब मुझे मिला, उसी समय क्यों नहीं वापिस किया....

अब बात समझ में आ गई। भगवान को पता लग गया था कि मुझे क्लिप कितना अच्छा लग रहा था। इसीलिये उन्होंने उसका क्लिप गिराया और मुझे दिखाया। जो चीज मुझे भगवान ने दी है, वह मैं वापिस क्यों करूँ?''

थोड़ी देर में आद्या बस से उतर गई। कुछ आगे चलकर काव्या भी उतर गई।

घर पहुँचने के बाद काव्या कुछ चुप-चुप थी। माँ ने उससे पूछा, "इतनी चुप क्यों हो?"

काव्या बोली, "नहीं, ऐसी तो कोई बात नहीं है। मैं ठीक तो हूँ।"

उसके नाना जी ने पूछा, "आज इतनी चुप क्यों हो? टीचर ने सजा दी थी क्या?" काव्या ने जवाब दिया, "नहीं, मेरी टीचर तो बहुत अच्छी है। मैं बिल्कुल ठीक हूँ। जैसी रोज होती हूँ, वैसी ही तो हूँ।" उसके बाद काव्या चेहरे पर नकली मुस्कराहट ले आई। उसने इधर-उधर की बातें करने का भी विशेश प्रयत्न किया ताकि उससे कोई और प्रश्न न पूछे।

अगले दिन आद्या ने टीचर से कहा "कल मेरा एक बालों का क्लिप स्कूल में गुम हो गया।" टीचर ने क्लास से पूछा, "कल आद्या का क्लिप स्कूल में खो गया। किसी ने उसको देखा है क्या?"

सारे चुप बैठे रहे। काव्या भी चुप बैठी रही परन्तु उसके मन में बेचैनी होने लगी। टीचर ने कहा, "हो सकता है आप में से किसी ने देखा हो, और उसे उठा भी लिया हो क्योंकि आपको मालूम नहीं था कि क्लिप किसका है। अब आप को पता चल गया है किसका था तो आद्या को वापिस दे दीजिये।" सारे चुप बैठे रहे। काव्या भी चुप बैठी रही परन्तु उसकी बेचैनी और भी बढ़ गई। टीचर ने कहा, "सॉरी बेटा, तुम्हारा क्लिप किसी ने नहीं देखा। आगे से अपनी चीजों को ध्यान रख करो।"

काव्या को साँस में साँस आई। उसने सोचा, "मैंने भी यही सोचा था कि आद्या को अपनी चीज़ों का ध्यान रखना चाहिये। टीचर ने भी वही बात कही है। अब इस मामले के बारे में सोचने की कोई ज़रूरत नहीं है।"

परन्तु काव्या अधिक समय तक ख़ुश नहीं रह पाई। उसको समझ में नहीं आ रहा था कि उसकी बेचैनी खत्म क्यों नहीं हो रही थी। क्लिप बस्ते में ही पड़ा रहा और काव्या के घर पहुँच गया।

घर में आज काव्या बाहर से तो ठीक थी, परन्तु उसके मन में विचारों की एक और लड़ी लग गई :

“अब मेरे पास क्लिप तो है, परन्तु मैं उसे बालों में लगाऊँगी कब?....

यदि मैं उसे घर में बस्ते से बाहर निकालूँगी तो मेरी माँ या नाना जी देख लेंगे....

यदि मैं स्कूल में लगाउँगी तो आद्या देख लेगी....

मुझे क्लिप बालों में किसी ऐसी जगह लगाना चाहिये जहाँ उसे कोई भी न देखे....

जहाँ उसे कोई भी नहीं देखेगा, वहाँ भी भगवान तो देखेगा।''

काव्या फिर बेचैन हो गई। उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था, जब एक बार मामला बन्द हो चुका है तो फिर बार-बार क्यों उठता है? उसे अन्दर कहीं से एक आवाज आ रही थी कि मामला सचमुच बन्द तभी होगा जब वह सच बोलेगी और क्लिप आद्या को दे देगी।

उसे याद आया कि उसने फैसला किया था कि अच्छा इन्सान बनेगी। अच्छा इन्सान चोरी नहीं करता। अच्छा इन्सान यदि कोई गलती करता है तो उसे मान लेता है। अब मामला बन्द हो गया। उसे पता चल गया कि क्या करना है। क्लिप बस्ते में एक बार फिर स्कूल चला गया।

स्कूल में काव्या पूरा समय सोचती रही कि उसने जो करने का फैसला किया है, वह कब करे और कैसे करे। यदि वह टीचर के पास जाकर सच बताती है तो टीचर शायद फिर भी उसे चोरी करने की सजा दे। यदि वह पूरी क्लास के सामने सच बोलती है तो पूरी क्लास उसे चोर मानेगी। उसने फैसला किया कि वह क्लिप आद्या को चुप-चाप ऐसे समय देगी जब कोई भी और देख न रहा हो। परन्तु पूरे दिन में ऐसा कोई अवसर आया ही नहीं। क्लिप बस्ते में पड़ा रहा, और एक बार फिर घर पहुँच गया।
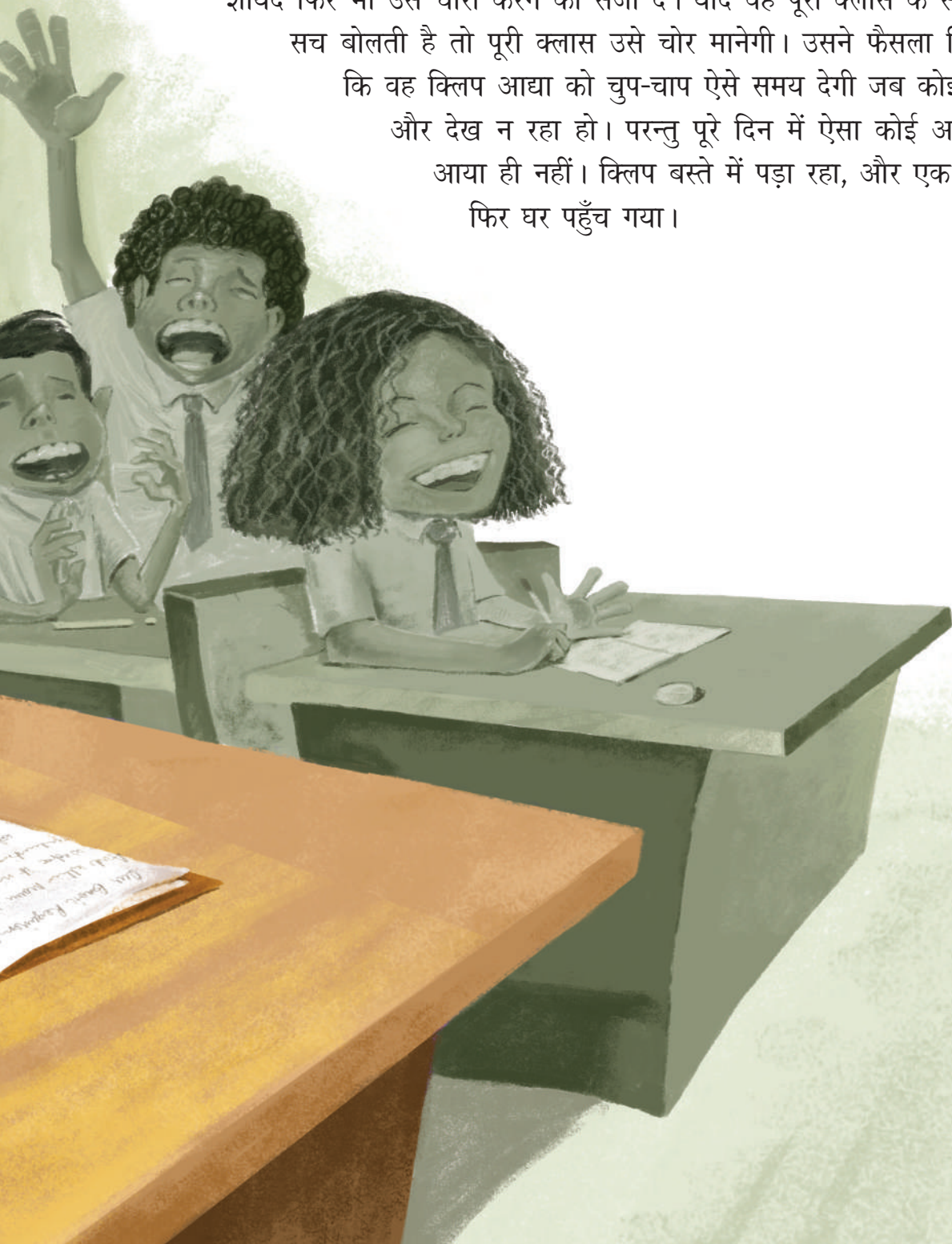
घर पर उसके मन में एक और विचारों की लड़ी लग गई :

यदि मैं आद्या को क्लिप ऐसे समय भी दूँ जब कोई देख न रहा हो तो फिर भी तो वह टीचर को बता सकती है....

यदि मे क्लिप आद्या को ऐसे समय भी दूँ जब कोई देख न रहा हो तो फिर भी तो वह क्लास के दूसरे बच्चों को बता सकती है

शायद ठीक यही रहेगा कि क्लिप बस्ते में ही पड़ा रहे। टीचर ने तो मामला बन्द कर ही दिया है। आद्या भी बिल्कुल ठीक लगती है। मैं ही पागलों की तरह सिर खपा रही हूँ।

अब इस व़िाय पर सोचने की बिल्कुल जरूरत नहीं है।''

क्लिप बस्ते में पड़ा रहा, और एक बार फिर स्कूल पहुँच गया।

स्कूल में काव्या किसी भी बात को ध्यान नहीं दे पा रही थी। उसे याद आया कि उसने अच्छा इन्सान बनने को फैसला किया था। फिर उसके मन में विचारों की एक और लड़ी लग गई :

"चाहे सजा मिलने का डर हो, फिर भी अच्छा इन्सान हमेशा ठीक काम करता है।

चाहे कुछ हो जाए, अच्छा इन्सान हमेशा ठीक काम करता है....

मेरे लिये केवल एक ही चीज ठीक है, और वह है सच बोलना और क्लिप वापिस कर देना। अब यह मामला सचमुच बन्द हो गया है।''

काव्या को लगा कि इस बात को लेकर उसने जितना दुख सहन किया है, उतना ही बहुत है, इससे अधिक दुख वह नहीं सह सकती। इसलिये वह एक मिनट की भी देर किये बिना खड़ी हो गई, और टीचर को जल्दी-जल्दी एक साँस में बोली : "मैडम, मैंने उस दिन एक भारी गलती की। मैंने आद्या का क्लिप गिरते हुए देखा था। मैंने उसे उठा कर रख लिया। वह मैंने गलत काम किया। मैंने इतने दिन तक क्लिप को अपने पास रखा, वह गलत काम भी मैंने किया। जब आपने क्लास से पूछा तब भी मैं चुप बैठी रही। वह तो बहुत बड़ी गलती थी। मैंने जब से क्लिप उठाया है, तब से मैं बहुत बेचैन हूँ। अब मैं सच बोल रही हूँ। मैं क्लिप आद्या को देना चाहती हूँ। मैंने जो सारी गलतियाँ की हैं, उनके लिये आप मुझे जो चाहें सजा दीजिये।"

अब काव्या रो रही थी, और रोते-रोते उसने बस्ते में हाथ डालकर क्लिप निकाला। क्लिप निकालकर वह आद्या की ओर मुड़ी।

कुछ क्षणों के लिए, जो बहुत लम्बे लगने लगे, क्लास में घोर सन्नाटा छा गया। टीचर ने प्यार से काव्या पर हाथ रखकर कहा, ''साफ नजर आ रहा है कि तुमने जो गलतियाँ की हैं, उनके कारण तुमने कितना दुख सहा है। वही तुम्हारी सजा है। मैं तुम्हें और कोई सज़ा नहीं दूंगी। अब सच बताने के बाद तुम्हें कैसा लग रहा है ?'' काव्या ने कहा, "मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मेरे सिर से एक भारी बोझ उतर गया।'' टीचर ने कहा, "वही सच बोलने के लिये तुम्हारा इनाम है। मैं तुम्हें उसके लिये कोई इनाम भी नहीं दूंगी,'' टीचर ने प्यार से मुस्कराते हुए कहा।

जब काव्या आद्या की ओर मुड़ी, आद्या ने क्लिप लेने के लिये हाथ नहीं बढ़ाया। आद्या बोली, "तुम्हे क्लिप इतना अच्छा लगता है तो रख लो। क्या मैं सहेली को एक छोटा सा क्लिप भी नहीं दे सकती? मुझे चाहिये होगा तो मैं जाकर दूसरा ले लूंगी।"

पूरी क्लास में चैन की एक लहर दौड़ गई। क्लास का वातावरण आनन्द से भर गया। सारे बच्चे खुशी की तालियाँ बजाने लगे।

## माता-पिता एवं अध्यापिकाओं के लिये

जीवन में हम निर्णय तीन स्तर पर लेते हैं : मन (दिल), बुद्धि (दिमाग) और आत्मा (अन्दर की आवाज)। मन हमें उन चीजों की ओर आकर्षित करता है जो हमें अच्छी लगती हैं। मन वासनाओं और प्रलोभन का घर है। बुद्धि तर्क-वितर्क के आधार पर काम करती है। बुद्धि हमें उन चीजों की ओर ले जा सकती है जो सही, अच्छी और सार्थक हों। यदि मन और बुद्धि के लक्ष्य में भेद हो तो बुद्धि हमें सही मार्ग दिखा सकती है। परन्तु बुद्धि प्रायः मन पर अंकुश नहीं लगा पाती क्योंकि भावनाएँ बहुत प्रबल होती हैं। परिणामस्वरूप बुद्धि प्रायः दिल को तो काबू नहीं कर पाती, उल्टे दिल बुद्धि को वश में कर लेता है। बुद्धि के वशीकरण का परिणाम यह होता है कि बुद्धि अब ऐसे तर्कों का आविकार करती है जिन से मन की इच्छाओं को ठीक सिद्ध किया जा सके (इसे कहते हैं, मत मारी जाना!)। इस प्रकार बुद्धि का लचीलापन ऐसी परिस्थितियों में एक कमजोरी बन जाता है। बुद्धि के लचीलेपन के कारण हम किसी भी बात को ठीक ठहरा सकते हैं। सौभाग्यवश निर्णय लेने के लिए हमारे पास बुद्धि से भी ऊँचा और भरोसेमन्द एक यन्त्र है। तात्पर्य है अन्तर्आत्मा की आवाज से, जिसे हम प्रायः अन्दर की आवाज कहते हैं, श्री अरविन्द और श्री माँ इसे चैत्य पुरूष की आवाज कहते हैं। यह आवाज बहुत स्पष्ट होती है, सदैव सही होती है, और तर्क-वितर्क में नहीं जाती, इस आवाज को तर्क के सहारे की आवश्यकता नहीं होती। संवेदनशील मनुष्यों में (बच्चे संवेदनशील होते हैं) यह आवाज प्रायः अपनी बात मनवा लेती है क्योंकि उसे न मानने से बेचैनी होती है, और मान लेने से हर्ा एवं शान्ति प्राप्त होते हैं। अतः बुरे काम की सजा, और अच्छे काम के लिये पुरस्कार मिलने की प्रणाली हमारे अन्दर है। माँ-बाप और अध्यापक इस प्रणाली की खोज में बच्चे की सहायता कर सकते हैं। इस प्रणाली की अनुभूति बच्चे को किसी और द्वारा दिये गए पुरस्कार और सजा से ज्यादा सहज एवँ कुशल रूप से सन्मार्ग पर चलने के लिये प्रेरित करती है।

**रमेश बिजलानी** चिकित्सक हैं, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में प्रोफेसर थे, परन्तु अब केवल साधक हैं। उन्होंने कई विषयों पर कुल मिला कर 15 पुस्तकें लिखी हैं। डाक्टरों के अतिरिक्त सामान्य जनता और बच्चों के लिए भी बहुत कुछ लिखा है। वे श्री अरविन्द और श्री माँ के शिष्य हैं, और श्री अरविन्द आश्रम - दिल्ली शाखा में रहते हैं। वे आध्यात्मिक शिविर संचालित करते हैं, प्रेरणाजनक वक्ता हैं, और शेष समय में लिखते रहते हैं।

**मोहित सुनेजा** दिल्ली कॉलेज ऑफ आर्ट्स में अध्यापक हैं, और बेहतरीन चित्रकार हैं। उन्होंने बच्चों की कई पुस्तकों के लिये चित्र बनाए हैं। उनकी विशेषता यह है कि बच्चों के मन की बातों को वे चित्रों का रूप दे देते हैं। उनकी शैली अपनी ही है, और भारतीय संस्कृति के अनुरूप है।